www.krishipravahika.vitalbiotech.org

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 11, 1-5

Article ID: 227

चीता और इसका भारत में पुनरावतरण

डॉ. कृष्णेन्द्र सिंह नामा[1] एवं डॉ. किरन चौधरी[2]

[1]वन्यजीव विशेषज्ञ, सोसाइटी फॉर कांसेर्वेशनऑफ हिस्टोरिकल एंड इकोलॉजिकल रिसोर्सेज, कोटा

[2]व्याख्याता, वनस्पति शास्त्र, एल्ज़ेब्रा कॉलेज, कोटा (राजस्थान)

चीता अपनी गति के लिए विश्व विख्यात बड़ी बिल्ली प्रजातियों में से एक है। चीतों ने सम्पूर्ण वेग से दौड़ने की क्षमता को बढाने के लिए कई अनुकूलन विकसित किए हैं। अधिकांश मांसाहारियों के विपरीत, चीता मुख्य रूप से दिन के दौरान सक्रिय होते हैं। चीता विभिन्न प्रकार के आवासों में निवास करते हैं, जिनमें शुष्क, खुले घास के मैदान सर्वप्रमुख हैं, साथ ही साथ सघन वनस्पति और ऊपरी चट्टानी इलाके भी शामिल हैं। चीता कम से कम 3000 ईसा पूर्व से मनुष्यों के साथ रहता आया है । 1900 में अनुमानित 100,000 चीते पूरे महाद्वीपीय अफ्रीका और मध्य पूर्व और अरब प्रायद्वीप से लेकर भारत तक पाए गए थे। आज यह वन्यजीव जलवायु परिवर्तन, मनुष्यों द्वारा शिकार और आवास विनाश से विलुप्त होने के दबाव का सामना कर रहा है, जिससे उनकी आबादी निरंतर कम हो रहा है। हाल हीं में प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में मध्य प्रदेश के कुनो नेशनल पार्क में आठ चीतों को छोड़ा गया है । भारत में चीतों के विलुप्त होने के कई दशकों के बाद, "भारत में चीतों के परिचय के लिए कार्य योजना" पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन बहाल करने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल साबित होगी।

आवास एवं अनुकूलन :

चीता अफ्रीका और मध्य ईरान की विडाल वंशी प्रजाति है । यह ज़मीन पर सबसे तेज़ दौड़ने वाला जानवर है, जो 80 से 128 किमी/घंटा (50 से 80 मील प्रति घंटे) की रफ़्तार से दौड़ने में सक्षम है । इस गति के लिए इसकी शारीरिक बनावट में अनेक अनुकूलन पाए जाते है : जैसे- हल्का शरीर, लंबे पतले पैर और एक लंबी पूंछ शामिल है। जब चीते पूरी गति से दौड़ रहे होते हैं, तो उनके कदमों के बीच की लंबाई 6-7 मीटर तक होती है। उनके पैर प्रत्येक कदम के दौरान केवल दो बार जमीन को छूते हैं। चीता के अर्ध-असंकुचंशील पंजे (लगभग कुत्ते के पंजे की तरह) इसे दौड़ते समय बहुत अधिक संकर्षण देने के लिए फुटबॉल के जूते के क्लैट की तरह काम करते हैं। अधिकांश बिल्लियों के पंजे के पैड नरम होते हैं, लेकिन चीता के पैड टायर पर लगे रबर की तरह सख्त होते हैं। जब वे इतनी तेजी से दौड़ रहे होते हैं तो इससे उन्हें जमीन पर पकड़ बनाने में भी मदद मिलती है। चीते की मांसल पूंछ लगभग सपाट होती है। जो नाव पर पतवार की तरह काम करती है क्योंकि वे इसका उपयोग अपने सञ्चालन को नियंत्रित करने के लिए करते हैं और बहुत तेज दौड़ते समय अपना संतुलन बनाए रखते हैं। चीता एकमात्र बड़ी बिल्ली है जो दौड़ते समय हवा में मुड़ने में सक्षम है। इसका सिर छोटा और गोल होता है, जिसमें एक छोटा थूथन और चेहरे पर काली धारियाँ होती हैं। ये धारियां चीतों की आँखों को सूरज की चमक से सुरक्षित रखती है, इन्हें "टिअर मार्क्स" कहते है । ये मार्क्स उनकी आंखों के अंदरूनी कोनों से नीचे उनके मुंह के बाहरी किनारों तक होते हैं। दिन में शिकार के दौरान ये सूर्य की चमक को प्रतिबिंबित करने में मदद करते हैं । वे ठीक उसी तरह काम करते हैं जैसे फुटबॉल खिलाड़ी खेल के दौरान अपनी आंखों के नीचे काले मार्क्स लगाते हैं। ये निशान चीते को शिकार पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करते

हैं। शरीर पर क्रीमी-सफेद या हल्के भूरे रंग का आवरण होता है, जो सामान्यत: लगभग 2000 समान दूरी वाले, ठोस काले धब्बों से ढका होता है। आंतरिक रूप से, यकृत, अधिवृक्क ग्रंथियां, फेफड़े, ब्रांकाई, नासा मार्ग और हृदय सभी तीव्र शारीरिक गतिविधि के अनुकूल बड़े आकार के होते हैं।

चीता विभिन्न प्रकार के आवासों जैसे- सेरेनगेटी में सवाना, सहारा में शुष्क पर्वत श्रृंखला और ईरान में पहाड़ी रेगिस्तानी इलाकों में पाया जाता है। चीता तीन मुख्य सामाजिक जीवन शैलियों में रहता है: मादा और उनके शावक, नर "गठबंधन", और एकान्त नर। मादाएं बड़े इलाकों में शिकार की तलाश में खानाबदोश जीवन जीती हैं, जबकि नर प्राय: कम घुमंतु प्रवृत्ति के होते हैं और ये शिकार की बहुतायता और मादाओं की उपलब्धता वाले क्षेत्रों में बहुत छोटे अधिकार क्षेत्र स्थापित करते हैं। चीता दिन के दौरान सक्रिय रहता है, एवं सुबह और शाम का समय चोटियों पर बिताता है। इससे बड़े मांसाहारियों से प्रतिस्पर्धा की आवृत्ति कम होती है। यह छोटे से मध्यम आकार के जीवों का शिकार करता है।

अन्य "बड़ी बिल्लियों" के विपरीत चीता दहाड़ते नहीं हैं। जब वे खतरे का सामना करते हैं तो वे गुर्राते हैं, और उच्च स्वर में मिमियाते हैं। चीते आपस में संवाद करते समय भौंकते हैं। चीता बड़ी बिल्लियों में भी अद्वितीय है क्योंकि यह सांस लेने और छोड़ने दोनों के दौरान भी घुरघुरा सकते है।

चीता मांसाहारी होते हैं और ज्यादातर छोटे मृग जैसे स्प्रिंगबोक, स्टीनबोक, थॉमसन गज़ेल और डुइकर पर भोजन करते हैं। वे आमतौर पर अपने शिकार का पीछा करते हैं। उसे दौड़ते है और उस पर चार्ज करके दम घुटने तक उसके गले को अपने जबड़ों में दबाए रखता है । यह एक मिथक है कि चीते दौड़ते समय अधिक गर्म होने के कारण शिकार करना छोड़ देते हैं। नए शोध से पता चलता है कि चीतों के शरीर का तापमान कभी भी वाइल्ड में इतना अधिक नहीं होता है, और वे अधिक गर्मी के कारण शिकार करना नहीं छोड़ते हैं।

यह साल भर प्रजनन करता है। लगभग तीन महीने के गर्भ के बाद, आमतौर पर तीन या चार शावकों का जन्म होता है। चीता शावकों के लंबे-लंबे बाल होते हैं जो उनकी गर्दन से लेकर उनकी पूंछ के आधार तक नीचे की ओर होते हैं, जिसे "मेंटल" कहा जाता है। मेंटल चीता शावक को कब्र बिज्जू की तरह बनाता है और उन्हें लंबी घास में छिपने में सहायता देता है, जो उन्हें शेरों और लकड़बग्घों जैसे खतरों से सुरक्षित रखने में मदद करता है। चीता शावक अन्य बड़े मांसाहारी जैसे लकड़बग्घे और शेरों द्वारा उम्र के शुरुआती दौर में ही मार दिए जाते हैं। शावक लगभग चार महीने तक माँ के दूध पर आश्रित रहने के बाद, लगभग 20 महीने की उम्र स्वतंत्र शिकारी बन जाते हैं। जंगल में चीता आमतौर पर 10-15 साल तक जीवित रहते हैं। जबकि केप्टिविटी में 20 वर्ष की आयु तक पहुँच सकते हैं।

चीत : स्पीड मशीन
(फ़ोटो स्त्रोत- गूगल इमेज)

आज चीता प्रजाति अनेक कारकों जैसे जलवायु परिवर्तन, प्राकृतवास का विनाश, मनुष्यों के साथ संघर्ष, अवैध शिकार और बीमारियों के लिए उच्च संवेदनशीलता आदि के कारण अस्तित्व को बचाए रखने के लिए संघर्षरत है। अतीत में भी कम से कम दो बार इस प्रजाति को विलुप्त होने का सामना करना पड़ा है, जिससे इनब्रीडिंग हुई है। विशेषज्ञों का मानना है कि चीते घरेलू बिल्लियों से फैलने वाली संक्रामक बीमारियों से भी पीड़ित हो सकते हैं। चीता आंशिक रूप से इन दबावों का सामना करने के लिए संघर्ष करते हैं क्योंकि उनके पास प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया

करने के लिए आनुवंशिक परिवर्तनशीलता की कमी होती है। साक्ष्य बताते हैं कि चीतों ने अतीत में आनुवंशिक बाधाओं का सामना किया है और बच गए हैं।

चीतों का भारतीय इतिहास :

चीता संस्कृत भाषा से व्युत्पन्न शब्द है, जो भारत में इस एशियाई चीते के लम्बे इतिहास को दर्शाता है।

20वीं शताब्दी तक, एशियाई चीता काफी सामान्य था और सम्पूर्ण मध्य-पूर्व में अरब प्रायद्वीप से लेकर ईरान, अफगानिस्तान और भारत तक पाया जाता था । एशियाई चीते को भारत में "शिकारी तेंदुआ" के रूप में भी जाना जाता है । यहाँ के राजाओं द्वारा चीतों को चिंकारा और कृष्ण मृग का शिकार करने के लिए पाला जाता था। माना जाता है कि फ़िरोज़ शाह तुगलक वह प्रथम शासक था जिसने सर्वप्रथम मध्यकाल में चीतों को शिकार के लिए वश में किया। मुगल बादशाह अकबर के पास लगभग 1000 चीते थे।

1608 में, ओरछा के राजा वीर सिंह देव के कब्जे में एक सफेद चीता उपस्थित होने के प्रमाण है । मुगल सम्राट जहांगीर ने अपनी पुस्तक तुजुक-ए जहांगीरी में इस पर नीले रंग के धब्बे होने का वर्णन किया है। फ्रांसीसी यात्री जीन डे थेवेनॉट ने औरंगजेब के शासनकाल के दौरान अपनी सामयिकी में उल्लेख किया है कि केवल प्रांतीय गवर्नरों को ही चीतों को पकड़ने एवं पिंजरे में रखने करने की अनुमति थी। जंगल में अपनी माँ से शिकार सीख चुके चीतों को वयस्क होने के बाद, शाही शिकार में सहायता के लिए पकड़ना भारत में इस प्रजाति के तेजी से गिरावट का एक और प्रमुख कारण है क्योंकि कैद में रहने वाले चीते कभी प्रजनन नहीं कर पाते थे। इस सन्दर्भ में मात्र एक शावक के जन्म लेने के प्रमाण है।

शिकार के लिए प्रयुक्त भारतीय चीता
(फ़ोटो स्त्रोत- गूगल इमेज)

ब्रिटिश शासन के अंत में प्रारंभिक वर्षों की तुलना में भारत में चीतों के शिकार की कम संख्या दर्शाती है की पहले ही इनकी आबादी घट चुकी थी । एक शोध के अनुसार 1799 तक भी कम से कम 230 चीते जंगल में मौजूद थे।

भारत में एशियाई चीता का अंतिम भौतिक साक्ष्य उन तीन नर चीतों के रूप में माना जाता है, जिन्हें 1948 में सरगुजा राज्य के महाराजा रामानुज प्रताप सिंह देव ने गोली मार दी थी, लेकिन 1951 में कोरिया जिले (छत्तीसगढ़) में एक मादा चीता के दिखाई देने के साक्ष्य भी है ।

भारत में एशियाई चीतों की शेष अंतिम आबादी की मृत्यु के साथ ही, इस प्रजाति को भारत में विलुप्त घोषित कर दिया गया; यह इतिहास में एकमात्र ऐसा

वन्यजीव है जो अप्राकृतिक कारणों से भारत से विलुप्त हो गया । चीतों के विलुप्त होने का परिणाम यह हुआ कि उनके प्राकृतिक आवास अर्थात् घास के मैदानों को स्थानीय लोगों द्वारा नियंत्रित, उपयोग और प्रबंधित किया जाने लगा। घास के मैदान सिमट गए । पंजाब में, वन भूमि को कृषि एवं मानव आबादी बसाने के लिए बड़े पैमाने पर साफ किया गया, जिससे पहले खुले घास के मैदानों में बड़े झुंडों द्वारा चरने वाले काले हिरण पंजाब से विलुप्त हो गए और इनके साथ चीता। बाद में, भारत के अन्य क्षेत्रों में भी प्राकृतिक आवास का विनाश, शिकार की कमी और ट्रॉफी शिकार एशियाई चीतों के विलुप्त होने के कारण बने।

एशियाई चीता :

एशियाई चीता (*एसिनोनिक्स जुबेटस वेनेटिकस*) एक गंभीर रूप से संकटग्रस्त चीता की उप-प्रजाति है जो वर्तमान में केवल ईरान में जीवित है। कभी यह अरब प्रायद्वीप और निकट पूर्व से कैस्पियन क्षेत्र, ट्रांसकॉकेशस, क्यज़िलकम रेगिस्तान और भारत में पाया जाता था, लेकिन 20 वीं शताब्दी के दौरान इन क्षेत्रों से विलुप्त हो गया । वर्तमान में एशियाई चीता ईरान के पूर्वी-मध्य शुष्क क्षेत्र में संरक्षित क्षेत्रों में पाया जाता है, जहां मानव जनसंख्या घनत्व बहुत कम है। दिसंबर 2011 से नवंबर 2013 के मध्य, 14 अलग-अलग संरक्षित क्षेत्रों में 84 और 82 चीतों की पहचान कैमरा ट्रैप तस्वीरों से की गई थी। दिसंबर 2017 में, ईरान के केंद्रीय पठार के लगभग 140,000 किमी^{2} (54,000 वर्ग मील) क्षेत्र में एशियाई चीते की तीन उप-जनसंख्याओं में 50 से कम चीतों को शेष पाया गया। जनवरी 2022 तक, ईरानी पर्यावरण विभाग का अनुमान है कि ईरान में केवल 12 एशियाई चीते (9 नर और 3 मादा) बचे हैं। एशियाई चीता के संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय जागरूकता बढ़ाने के लिए, 2014 फीफा विश्व कप में ईरान की राष्ट्रीय फुटबॉल टीम की जर्सी पर चीते के चित्र का इस्तेमाल किया गया था।

भारत में चीता का पुन: प्रवेश:

1950 के दशक के मध्य में विलुप्त होने की पुष्टि के तुरंत बाद भारत में चीतों के पुनर्वास पर चर्चा शुरू हुई। 1970 के दशक से ईरान की सरकारों को प्रस्ताव दिए गए थे, लेकिन वहां की राजनीतिक अस्थिरता के कारण ये विफल रहे। केन्या से अफ्रीकी चीतों को लाने के लिए भी 1980 के दशक की शुरुआत में प्रस्ताव दिए गए थे। पुन: 2009 में भारत सरकार द्वारा अफ्रीकी चीतों को लाने का प्रस्ताव दिया गया था, लेकिन भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने इसे अस्वीकार कर दिया। न्यायालय ने 2020 की शुरुआत में अपने फैसले को परिवर्तित किया, जिससे लंबी अवधि के अनुकूलन के परीक्षण के लिए प्रायोगिक आधार पर एक छोटी संख्या के आयात की अनुमति मिली। 17 सितंबर 2022 को, नामीबिया की सरकार की ओर से चार से छह साल की उम्र के बीच के पांच मादा और तीन नर दक्षिण-पूर्व अफ्रीकी चीतों को मध्य प्रदेश राज्य में कुनो नेशनल पार्क के भीतर एक छोटे से क्वारंटाइन बाड़े में छोड़ा गया ।

21 वीं सदी में भारत में चीते का पहला कदम
(फ़ोटो स्त्रोत- गगल इमेज)

कुनो राष्ट्रीय उद्यान एक अपेक्षाकृत नया राष्ट्रीय उद्यान है जिसे 2018 में यह दर्जा दिया गया था। इसे पहले इसे एशियाई शेरों को पुनर्वसित करने की परियोजना के अंतर्गत एक वन्यजीव अभयारण्य के रूप में स्थापित किया गया था । जिसका उद्देश्य एशियाई शेरों की अंतिम आबादी की रक्षा के लिए वैकल्पिक आबादी स्थापित करना था। किन्तु 2013 में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गुजरात सरकार को दिए गए इस आदेश को अमल में नहीं लाया जा सका।

यहाँ लाये गए सभी चीतों के रेडियो कॉलर लगाये गए हैं । ये एक महीने के लिए क्वारंटाइन बाड़े में रहेंगे, जिसके बाद पहले नर और बाद में मादा चीतों को 748.76 किमी^{2} (289.10 वर्ग मील) क्षेत्र के पार्क में छोड़ दिया जाएगा। नामीबिया स्थित चीता संरक्षण फंड के प्राणी विज्ञानी लॉरी मार्कर द्वारा स्थानांतरण की निगरानी की गई है। 38.70 करोड़ रुपये की इस परियोजना में 2021-22 से 2025-26 के दौरान 2022 में बाद में दक्षिण अफ्रीका के 12 और चीतों को कुनो में छोड़ा जाएगा, और अंततः, कुनो में अफ्रीकी चीतों की कुल संख्या 40 तक की जाएगी।

इन चीतों के लिए आवास (ग्रासलैंड) विकसित करने के उद्देश्य से कूनो राष्ट्रीय पार्क से लगभग 150 गाँवों को दूसरे स्थान पर विस्थापित गया है । फिर इन क्षेत्रों को ग्रासलैंड के रूप में विकसित किया गया है ।

कुछ वन्य प्राणी विशेषज्ञों का मानना है कि एशियाई चीते ना होने के कारण इनकी अनुवांशिकता कुछ भिन्न है जो इनके समक्ष एक चुनौती है ।

कूनो में तेंदुए, भालू, लकड़बग्घे और भेड़िये भी काफ़ी संख्या में पाए जाते हैं, अत: नामीबिया के चीतों को यहाँ ख़ुद से ताक़तवर परभक्षियों का सामना करना पड़ेगा । वही दूसरी ओर कुछ विशेषज्ञों के अनुसार दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया में चीते शेर और तेंदुओं जैसे बड़े परभक्षियों के साथ रहते हुए आये है; एवं इन दोनों जगहों पर धब्बेदार लकड़बग्घे हैं, वो झुंड में रहते हैं और चीतों पर आक्रमण करते हैं । लेकिन कूनो में धारीदार लकड़बग्घे पाए जाते है जो झुंड में नहीं रहते है । इसलिए इन चीतों को भारत में सामंजस्य करने में समस्या नहीं आएगी ।

बरहाल, जो भी हो वर्तमान में भारत की धरती पर चीतों का कदम रखना पारिस्थितिकी और पर्यटन के लिए एक मज़बूत स्तंभ सिद्ध हो । ऐसी आशा की जाती है ।